नैक (NAAC) द्वारा 'A' ग्रेड प्राप्त
महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा
Mahatma Gandhi Antarrashtriya Hindi Vishwavidyalaya
(संसद द्वारा पारित अधिनियम 1997, क्रमांक के अंतर्गत स्थापित केंद्रीय विश्वविद्यालय)
(A Central University established by Parliament by Act No. 3 of 1997)
ज्ञान शांति मैत्री

'विश्व सभ्यता के लिए महात्मा गांधी की प्रासंगिकता' विषय पर अंतरराष्ट्रीय वेबिनार हिंदी विश्वविद्यालय में अंतरराष्ट्रीय वेबिनार

गांधी जी की विचारधारा आज भी प्रासंगिक – पालकमंत्री श्री सुनील केदार

- हिंदी विश्वविद्यालय एवं जिला प्रशासन, वर्धा का संयुक्त आयोजन
- सात देशों से विभिन्न वक्ताओं ने रखे विचार
- 21 वीं शताब्दी में आचार्य विनोबा भावे की प्रासंगिकता पुस्तक का विमोचन

वर्धा, दि. 08 अक्टूबर 2020: 21वीं सदी में महात्मा गांधी की विचारधारा प्रासंगिक बनी हुई है। गांधी जी के विचारों की सादगी, मानवता और अहिंसा की सीख से पूरी

दुनिया को पहुंचाने के लिए आगे आने की आवश्यकता है। गांधी एक विचार है और उनके विचारों से ही मानव समाज में परिवर्तन लाया जा सकता है। उक्त विचार कार्यक्रम के मुख्य अतिथि महाराष्ट्र राज्य के पशु संवर्धन, दुग्ध व्यवसाय विकास

तथा खेल एवं युवक कल्याण मंत्री तथा वर्धा जिले के पालकमंत्री श्री सुनील केदार ने व्यक्त किये।

महात्मा गांधी के 151वीं जयंती सप्ताह समापन समारोह के उपलक्ष्य में महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय और जिला प्रशासन, वर्धा के संयुक्त तत्वावधान में गुरूवार दि. 08 अक्टूबर को 'विश्व सभ्यता के लिए महात्मा गांधी की प्रासंगिकता' विषय पर अंतरराष्ट्रीय वेबिनार का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित श्री सुनील केदार ने अपने विचार

व्यक्त किये। इस अवसर पर '21 वीं शताब्दी में आचार्य विनोबा भावे की प्रासंगिकता' पुस्तक का विमोचन श्री सुनील केदार के करकमलों से किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. रजनीश कुमार शुक्ल ने की। इस अवसर पर मंच पर जिलाधिकारी श्री विवेक भीमनवार, प्रतिकुलपति प्रो. हनुमान प्रसाद शुक्ल, प्रतिकुलपति प्रो. चंद्रकांत रागीट एवं जय महाकाली शिक्षण संस्था के अध्यक्ष श्री शंकर प्रसाद अग्निहोत्री उपस्थित थे। वेबिनार में लंदन, दक्षिण अफ्रीका, उजबेकिस्तान, मॉरीशस, नेपाल और लिथुवानिया आदि देशों के विद्वानों ने अपने विचार रखे।

समारोह में बीज वक्तव्य देते हुए इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र, नई दिल्ली के सदस्य सचिव डॉ. सच्चिदानंद जोशी ने कहा कि 150 वर्ष बाद भी पूरा विश्व गांधी के विचारों का याद कर उनसे प्रेरित होता है। गांधी जी अपनी कृति और व्यवहार से आज भी प्रासंगिक हैं। उन्होंने कहा कि वर्तमान चुनौतियों पर गांधी विचार ही सकारात्मक और संतोषजनक उत्तर है। कार्यक्रम में मुख्य वक्ता के रूप में लंदन से सुविख्यात शिक्षाविद, गांधीवादी विचारक, पद्मभूषण प्रो. भीखू पारेख जी

ने संबोधित किया। उन्होंने कहा कि विश्व सभ्यता के लिए गांधी जी के मूल्यों का अनुसरण करना आज के समाज की आवश्यकता है। मानवता, धार्मिकता को लेकर गांधी हमें मार्ग दिखाते है और उनके विचार वसुधैव कुटुंबकम् की ओर ले जाते हैं।

कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. रजनीश कुमार शुक्ल ने कहा कि गांधी जी के तप का प्रभाव वर्धा नगर के जन और जीवन पर गहराई से पड़ा है। संयमपूर्ण जीवन क्या है इसे देखना और महसूस करना हो तो वर्धा एकमात्र स्थान है। कुटीर उद्योग और आत्मनिर्भरता के लिए गांधी जी ने जो दिशा यहां से पूरे भारत को दी है उसके अनेक उदाहरण इस शहर में मौजूद हैं। गांधी जी ने दिव्यता की जो सीख दी है उसका प्रकाश इस पावन भूमि पर पड़ा है। गांधी जी समता, समानता और बंधुता की जीवन प्रणाली है। कुलपति प्रो. शुक्ल ने

कहा कि गांधी जी संपूर्ण विश्व के लिए वैकल्पिक सभ्यता का प्रस्ताव है। उन्होंने घोषणा की कि गांधी जी के वर्धा में बिताये 14 वर्षों के कार्यकाल पर भारतीय इतिहास अनुसंधान परिषद के सहयोग से एक प्रकल्प शीघ्र ही शुरू किया जाएगा और इसे जल्द ही पूरा कर लिया जाएगा। इस अवसर पर कुलपति प्रो. शुक्ल ने कैबिनेट मंत्री श्री सुनील केदार को विश्वविद्यालय द्वारा प्रकाशित पुस्तकें भेंट की।

गांधी शांति प्रतिष्ठान, नई दिल्ली के पूर्व अध्यक्ष डॉ. पी. वी. राजगोपाल जी का कहना था कि गांधी जी का अहिंसा विचार युवाओं में रोपित करने की दिशा में

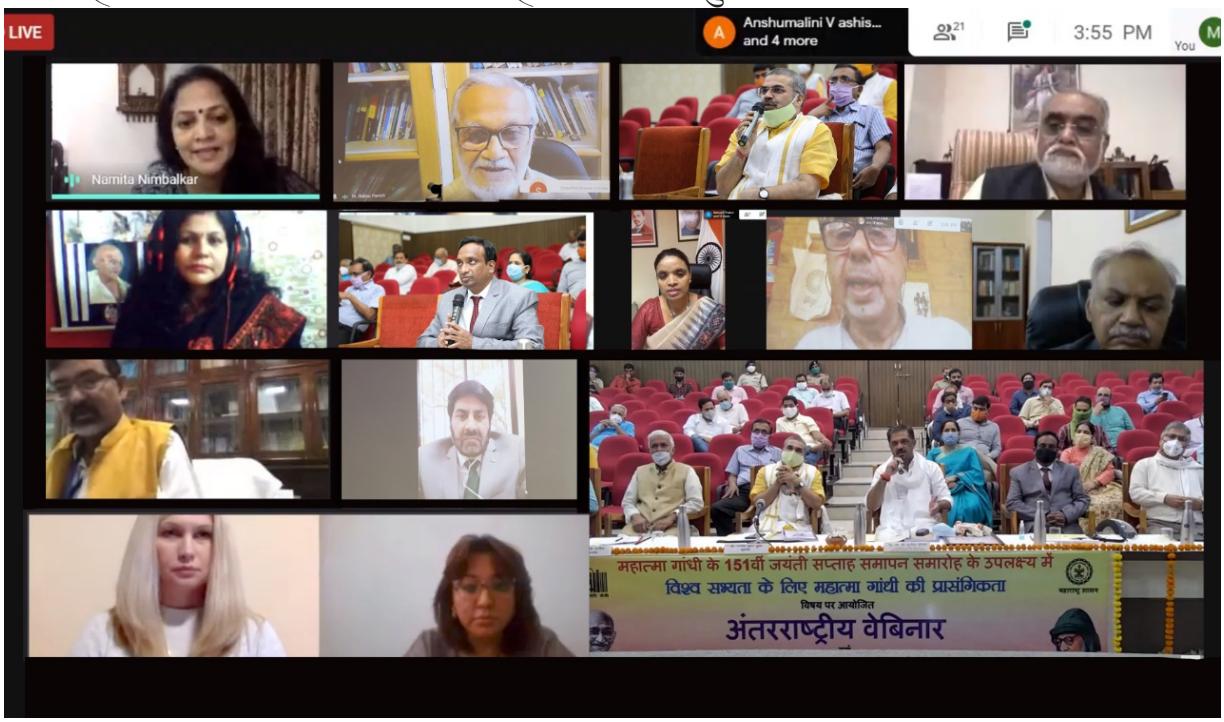

कार्य करने की आवश्यकता है। उन्होंने कहा कि गांधी जी के अहिंसा विचारों पर अध्ययन के लिए शिक्षण संस्थाओं ने बढ़ावा देना चाहिए।

नेपाल से 'द पब्लिक' की संपादक श्रीमती वीणा सिन्हा ने कहा कि विश्व सभ्यता के लिए गांधी कल, आज और कल भी प्रासंगिक हैं। नेपाल में महात्मा गांधी के विचार-व्यवहार से प्रेरणा लेकर तुलसी मेहेर, बी. पी. कोइराला जैसे अनेक लोगों ने गांधी जी के विचारों पर कार्य किया है। आज भी नेपाल में गांधी विचारों का प्रभाव बना हुआ है।

स्वामी विवेकानंद सांस्कृतिक केंद्र, जोहान्सबर्ग, दक्षिण अफ्रीका के निदेशक डॉ. बलवंत कुमार ठाकुर ने दक्षिण अफ्रीका में गांधी जी के 23 वर्षों के प्रवास पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि बतौर निदेशक गांधी विचारों पर नाटकों के प्रयोगों से उनके आचार-विचारों का युवाओं में पहुंचाने का कार्य किया जा रहा है।

दक्षिण अफ्रीका, जोहान्सर्ग में महावाणिज्यदूत के रूप में कार्यरत डॉ. अंजू रंजन ने कहा कि गांधी जी की विरासत का संरक्षण और संवर्धन किया जाना आवश्यक है। उन्होंने फिनिक्स सेटलमेंट और टालस्टाई फार्म को राष्ट्रीय विरासत स्थल घोषित करने की जरूरत पर बल दिया। उन्होंने कहा कि गांधी के नाम पर अधिकांश कर्तव्य की इतिश्री कर लेते है पर गांधी विचारों को व्यवहार में लाना बेहद जरूरी है।

लिथुवानिया की सुश्री तातीआना अकिदो ने गांधी जी के अहिंसा, सादगी, स्वावलंबन और सत्याग्रह के विचारों पर कार्य करने की आवश्यकता जतायी। राजकीय प्राच्य विश्वविद्यालय, ताशकंद, उज्बेकिस्तान की डॉ. निलुफर खोजाएवा ने भी अपने विचार व्यक्त किये।

कार्यक्रम का स्वागत वक्तव्य वर्धा के जिलाधिकारी श्री विवेक भीमनवार जी ने दिया। उन्होंने कहा कि गांधी जी अप्रैल 1936 में सेवाग्राम आए थे और यहां रहते हुए उन्होंने ग्राम विकास, कुटीर उद्योग और सामाजिक परिवर्तन का कार्य किया। स्वतंत्रता आंदोलन के दौर में गांधी जी ने अनेक कार्यों के माध्यम से विश्व को अहिंसा और शांति का संदेश दिया। कार्यक्रम का आयोजन विश्वविद्यालय के गालिब सभागार में किया किया गया।

कार्यक्रम का संचालन मुंबई विश्वविद्यालय में दर्शन विभाग की एसोशिएट प्रोफेसर डॉ. नमिता निंबालकर तथा दूर शिक्षा निदेशालय के सहायक प्रोफेसर डॉ. शंभू जोशी ने किया। धन्यवाद ज्ञापन विश्वविद्यालय के प्रतिकुलपति प्रो. चंद्रकांत रागीट ने किया। कार्यक्रम का संयोजन तथा सह-संयोजन डायस्पोरा विभाग के सहायक प्रोफेसर डॉ. मुन्नालाल गुप्ता एवं दर्शन एवं संस्कृति के सहायक प्रोफेसर डॉ. सूर्य प्रकाश पाण्डेय ने किया। कार्यक्रम में देश और विदेशों के विद्वान, अध्यापक शोधार्थियों, वर्धा के विविध संस्थानों के प्रतिनिधि, वर्धा जिलाधिकारी कार्यालय के प्रशासनिक अधिकारी तथा असंख्य नागरिकों ने ऑनलाइन सहभागिता की।